"रस-निष्पत्ति"

काव्य से रस किस प्रकार उत्पन्न होता है? यह काव्यशास्त्र में हमेशा से विवादित रहा है। रस-निष्पत्ति का विवेचन भारतीय काव्यशास्त्र में विवाद का विषय है। आचार्य भरतमुनि को रस सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने अपने 'नाट्यशास्त्र' में रस-निष्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा है— "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्तिः" अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस रससूत्र में विभाव, अनुभाव और संचारी भाव तो स्पष्ट है किन्तु 'संयोग' और 'निष्पत्ति' के अर्थ को लेकर आचार्य भरतमुनि के परवर्ती काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्यों अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या की है। 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्द की व्याख्या जिन आचार्यों ने की है, उन्हें रससूत्र का व्याख्याता आचार्य कहा जाता है। इन आचार्यों के नाम हैं— आचार्य भट्ट लोल्लट, आचार्य शंकुक, आचार्य भट्ट नायक और आचार्य अभिनव गुप्त।

आचार्य भट्ट लोल्लट ने निष्पत्ति का अर्थ 'उत्पत्तिवाद' या 'आरोपवाद' माना है। वे 'संयोग' शब्द के तीन अर्थ लगाते हैं। (i) स्थायी भाव के साथ उत्पाद्य-उत्पादक सम्बन्ध, (ii) अनुभाव के साथ गम्य-गमक सम्बन्ध, और (iii) संचारी भावों के साथ पोष्य-पोषक सम्बन्ध। वे

रस की मुख्य स्थिति अनुकार्य (मूल पात्र-जैसे राम आदि) में मानते हैं और गौण रूप से नट-नटी में। दर्शक अभिनेताओं पर मूल पात्रों का आरोप कर लेता है। इसीलिए आचार्य भट्ट लोल्लट के मत को आरोपवाद कहा जाता है। आचार्य भट्ट लोल्लट का मानना है कि रस की उत्पत्ति होती है। और उत्पत्ति के लिए कारण, कार्य सहकारी कारण से उत्पत्ति सम्भव होती है।

आचार्य शंकुक का मत 'अनुमितिवाद' के नाम से जाना जाता है। वे रस प्रक्रिया के लिए एक नए तथ्य को प्रस्तुत करते हैं। उनका मानना है कि रस की स्थिति अनुकार्य (मूल-पात्र) में होती है। आचार्य शंकुक ने 'चित्रतुरंग न्याय' के आधार पर रस की निष्पत्ति को माना है। इस न्याय (चित्रतुरंग न्याय) के अनुसार जिस प्रकार चित्र में बने तुरंग (घोड़े) को देखकर हम उसे घोड़ा मान लेते हैं, ठीक उसी प्रकार दर्शक नट (अभिनेता) में राम आदि की प्रतीति कर लेता है और उसके बाद उसमें रति आदि भावों का भी अनुमान कर लेता है। इस विलक्षण अनुमान को 'कला प्रतीति' कहा जाता है। आचार्य शंकुक ने संयोग का अर्थ 'अनुमान' और निष्पत्ति का अर्थ 'अनुमिति' लगाया है।

आचार्य भट्ट नायक के मत को 'भुक्तिवाद' कहा जाता है। इस निष्पत्ति में आचार्य भट्ट नायक का सबसे बड़ा योगदान 'साधारणीकरण' का सिद्धांत है। आचार्य भट्ट नायक ने रस निष्पति की नई व्याख्या दी है। उनका मानना है कि न तो रस की

उत्पत्ति होती है और न ही अनुमिति होती है तथा न ही उसकी अभिव्यक्ति होती है, बल्कि अनुभव और स्मृति के आधार पर इस की प्रतीति होती है। आचार्य भट्ट नायक ने शब्द के तीन व्यापार - (i) अभिधा (ii) भावकत्व और भोग (भोजकत्व) माना है। अभिधा व्यापार द्वारा काव्यार्थ का बोध होते ही साधारणीकरणात्मक भावकत्व व्यापार द्वारा स्थायी भाव और विभाव आदि का समग्र क्रियाकलाप देश, काल, व्यक्ति से सम्बन्ध न रहकर साधारण रूप ग्रहण कर लेता है। परिणामतः उक्त दोनों आपत्तियों का निराकरण हो जाता है। साधारणीकरण होते ही भोग (भोजकत्व) व्यापार द्वारा सामाजिक का सत्वगुण उसके रजोगुण और तमोगुणों का तिरोभाव करके उद्रिक्त हो जाता है। इसी व्यापार द्वारा सामाजिक रस का भोग अथवा रसास्वादन प्राप्त करता है। आचार्य भट्ट नायक ने संयोग का अर्थ 'भोज्य-भोजक संबंध' तथा निष्पत्ति का अर्थ 'भुक्ति' माना है। इसीलिए इनका मत 'भुक्तिवाद' कहलाता है।

आचार्य भरतमुनि के रस सूत्र के चौथे व्याख्याता आचार्य अभिनव गुप्त हैं। आचार्य अभिनव गुप्त ने रस निष्पत्ति सम्बन्धी अपनी मान्यता स्थायीभाव की स्थिति पर केन्द्रित रख कर प्रस्तुत की है। इसलिए आचार्य अभिनव गुप्त का मत को 'अभिव्यक्तिवाद' कहा जाता है। वे रस को व्यंजना का व्यापार मानते हैं। जिस प्रकार जल के छींटे देने से मिट्टी में व्याप्त गन्ध

व्यक्त हो जाती है, उसी प्रकार से सहृदय सामाजिक में वासना रूप में निरन्तर विद्यमान स्थायी भाव विभाव आदि के संयोग से अभिव्यक्त हो जाते हैं। वे रस की सत्ता आत्मगत मानते हैं। रस सहृदय सामाजिक के हृदय में व्याप्त होता है। आचार्य अभिनव गुप्त का मानना है कि राग-द्वेष की भावना को मनुष्य जन्म से ही लेकर पैदा होता है। समय-समय पर हम परिस्थिति के अनुकूल भावों का अनुभव करते हैं। ये सभी संस्कार रूप में मनुष्य के हृदय में सोते रहते हैं। इनसे रहित कोई प्राणी नहीं होता, इनकी प्रबलता में अन्तर जरूर होता है। जैसे कवि में इनकी अनुभूति अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। इन्होंने व्यंजना शक्ति के आधार पर रस सूत्र की व्याख्या की है। इनके अनुसार विभाव आदि और स्थायी भावों में परस्पर व्यंजक-व्यंग्य रूप संयोग द्वारा रस की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात् विभावादि व्यंजकों के द्वारा स्थायीभाव ही साधारणीकृत रूप में व्यंग्य होकर शृंगार आदि रसों में अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि जबतक विभावादि की अवस्थिति बनी रहती है, तबतक रस की अभिव्यक्ति होती रहती है। आचार्य अभिनव गुप्त ने संयोग का अर्थ 'व्यंग्य-व्यंजक भाव सम्बन्ध' एवं निष्पत्ति का अर्थ 'अभिव्यक्ति' माना है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास